हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-V (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 05 18/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi Sihag

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिंदी

'यूनीकोड' टेक्स्ट के क्षेत्र में विश्व की सभी भाषाओं को एकजुट करने की एक व्यवस्था का नाम है। गौरतलब है कि यूनीकोड से पूर्व की व्यवस्था 'आस्की' में 8 बिट की एक बाइट बनती थी जबकि यूनीकोड में 16 बिट की एक बाइट बनती है, जिससे कुल 65356 फॉन्ट प्राप्त होते हैं। इस संख्या में विश्व की लगभग सारी भाषाओं के शब्द समाहित किये जा सकते हैं।

यूनीकोड से पूर्व हिंदी टाइपिंग में मुख्य समस्या यह थी कि हिंदी के एक फॉन्ट का दूसरे फॉन्ट में या दूसरी भाषा से हिंदी में लिप्यंतरण में समस्या आती थी। इसके अलावा एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर कम्प्यूटर कार्य करने में भी शब्दों के रूप में परिवर्तन हो जाता था जैसे - विन्डोज से मैकिंटोश में।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु, यूनिकोड कंसोर्टियम ने विश्व की सभी भाषाओं को एक प्लेटफॉर्म पर ढालकर उपर्युक्त सभी समस्याओं का समाधान कर दिया है। साथ ही आधुनिक सभी डिवाइस (कंप्यूटर, मोबाइल), उनके सभी प्लेटफॉर्म (चाहे विंडोज हो या लिनक्स) और सिस्टम व एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर यूनिकोड से सुसंगत होकर आ रहे हैं।

इस प्रकार यूनिकोड ने भाषायी साम्राज्यवाद को भाषायी लोकतंत्र में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अशोक चक्रधर ने कहा है-

"सबको प्यारी अपनी भाषा
कंप्यूटर से जागी आशा
माँ हिन्दी की मिली गोद है
'यूनिकोड' का महामोद है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में काशी नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने प्रारंभ से ही देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि बनाने के पक्ष में आंदोलन चलाया है। 1935 में सभा ने महात्मा गांधी की अध्यक्षता में लिपि सुधार समिति का गठन किया जिन्होंने निम्न सिफारिशें प्रदान की-

(क) 'अ' की बारहखड़ी का प्रयोग होना चाहिये व मात्राओं के लिये अन्य प्रयोग समाप्त हो जाने चाहिये
ए- अे, ऐ- अै

(ख) पंचम अक्षरों के बजाय अनुस्वार का प्रयोग किया जाना चाहिये।
जैसे पङ्कज = पंकज

(ग) शिरोरेखा के प्रयोग को लेखन में समाप्त कर देना चाहिये।

(घ) मात्राओं को वर्ण के बाद में.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लगाना चाहिये
उदा० ह ि न द ी = हिन्दी

(5.) ~~ब~~ एक अन्य स्तर पर सभा ने अप्रयुक्त हो चुके ~~शब्दों~~ अक्षरों को भी समाप्त करने का सुझाव दिया।

इन सभी प्रयासों के साथ सभा ने स्वतंत्रता-पूर्व युग में नागरी लिपि के सुधारों हेतु अथक प्रयास किया। हालांकि समिति के सुधारों को मान्यता नहीं मिली (कुछेक को छोड़कर)।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की लिंग-व्यवस्था की समस्याएँ

हिंदी की लिंग व्यवस्था किन्हीं विशेष वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक प्रतिमानों या नियमों पर आधारित न होकर लोक प्रयोगों के द्वारा यादृच्छिक रूप से निर्मित हुई है। संस्कृत के तीन लिंगों (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग) के विपरीत हिंदी में दो ही लिंग (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग) विद्यमान है। इन सभी कारणों से कुछ समस्याएँ आती हैं -

(क) जो शब्द लिंग निरपेक्ष होते हैं उनका लिंग-निर्धारण करना कठिन हो जाता है जैसे - दही, सड़क, पानी, आग, आदि। लोक-प्रयोगों की दृष्टि से ही इनका लिंग निर्धारण कर दिया जाता है जैसे - आलू पुल्लिंग है तो भिंडी स्त्रीलिंग।

(ख) पदनामों को लेकर दूसरी समस्या आती है जैसे प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि। ध्यान देने योग्य बात है कि 'राष्ट्रपति' शब्द का स्त्रीलिंग बनाना अटपटा एवं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ हद तक हास्यास्पद लग सकता है। अनेक विद्वान इन्हें उभयलिंगी कहने की सलाह देते हैं।

(ग) तीसरी समस्या विदेशी शब्दों के हिंदी अनुवाद की प्रक्रिया में लिंग निर्धारण की है क्योंकि मूल-भाषा और हिंदी के प्रयोग में भिन्नता भी दिखलाई पड़ जाती है।

(घ) पुल्लिंग व स्त्रीलिंग के बहुवचन में भिन्नता दिखलाई पड़ती है। पुल्लिंग के बहुवचन में मुख्य व सहायक दोनों क्रियाएँ परिवर्तित होती हैं तो स्त्रीलिंग में केवल सहायक क्रिया।

लड़का जाता है - लड़के जाते हैं (पुल्लिंग)
लड़की जाती है - लड़कियाँ जाती हैं (स्त्रीलिंग)

इस प्रकार इन स्थितियों में असमानता की समस्या दिखाई देती है परन्तु समय के साथ-साथ इनका समाधान भी किया जा रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहा जाता है। विशेषण व्यवस्था हिन्दी में कुछ संस्कृत से विरासत में मिली है तो कुछ का हिंदी में विकास की प्रावस्था में उद्भव हुआ है। मुख्य विशेषण चार प्रकार के हैं।

(क) गुण वाचक विशेषण :- ये विशेषण शब्दरूप होते हैं जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के रंग, रूप आदि की विशेषताएँ बताते हैं जैसे काला लड़का, लंबी लड़की आदि।

(ख) सार्वनामिक विशेषण :- विशेषण जो अपने सर्वनामिक शब्दरूपों के स्तर पर ही संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की स्थिति को प्रकट कर देते हैं। जैसे- कितने लंबे हो तुम?

(ग) संख्या वाचक विशेषण :- यह किसी भी संज्ञा की निश्चित संख्याओं को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दर्शाता है। दो भेद

निश्चयवाचक संख्यावाचक - 'पाँच' दिन

अनिश्चयवाचक संख्यावाचक - 'कुछ' दिन

(घ) परिणामवाचक विशेषण - यह किसी संज्ञा की मात्रा या परिणाम की जानकारी देने वाला विशेषण है। दो भेद-

~~निश्चयवा~~ निश्चयवाचक - 5 लीटर दूध

अनिश्चयवाचक - 'थोड़ा' पानी

इस प्रकार विशेषण ~~अपनी~~ अपने प्रकारों में संज्ञा की विशेषता बताते हैं। अन्य भेद

उद्देश्य विशेषण = संज्ञा (विशेष्य) के बदले विशेषता बताना - "काला आदमी"

विधेय विशेषण - संज्ञा (विशेष्य) के बाद में प्रयुक्त होना।

"वह आदमी काला है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण से तात्पर्य है कंप्यूटर में प्रयोग हेतु प्रमुख तकनीकी एवं लिपिगत विकास करना। आरंभिक प्रयोगों की बात करें तो निम्न प्रयास दिखलाई पड़ते हैं-

(क) कंप्यूटर के दो सॉफ्टवेयर होते हैं- सिस्टम सॉफ्टवेयर (विंडोज आदि) एवं एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (शब्द संसाधन एवं ऑफिस संसाधन)।

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर में 1977 में हैदराबाद की कंपनी ई.एस.आई.एल. ने सर्वप्रथम 'कोद्रोन' नामक भाषा का विकास किया।

- दिल्ली की कंपनी जी.एस.एम. ने 'सिद्धार्थ' नामक मशीन पर 'शब्दमाला' प्रोग्राम का विकास किया ताकि हिंदी का प्रयोग कंप्यूटर पर हो सके। (1980)

- इसके बाद पूर्णे स्थित सी.डैक संस्था ने जिस्ट (GIST- Graphic based Indian Standard of terminology) नामक सॉफ्टवेयर का विकास किया ताकि हिंदी को कंप्यूटर में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के तौर पर इस्तेमाल किया जा सके।

(ख) अनुवाद कार्य एवं शिक्षण :- मोदी जीरोक्स नामक कंपनी ने हिंदी के अन्य भाषा से अनुवाद हेतु फोटोकॉपी जैसी मशीन का निर्माण किया।

- अन्य लोगों को हिंदी सीखाने हेतु 'लीला' नामक सॉफ्टवेयर का विकास

(ग) सिस्टम सॉफ्टवेयर :- सी. डैक का 'लीप' या 'एमंच' नामक सॉफ्टवेयर एवं माइक्रोसॉफ्ट का देहरादून स्थित संस्थान से 'हिन्दी विंडोज' (2004) इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास हैं।

(घ) टंकण :- शब्द रूपों हेतु आरंभिक 'आस्की' सॉफ्टवेयर, भाषा के स्तर पर 'बाराह' सॉफ्टवेयर एवं भाषा इंडिया का 'इंडिक आई. एम. ई.' इस स्तर पर प्रमुख प्रयास है।

निम्न प्रयासों के द्वारा ही आज हिंदी का कंप्यूटर के क्षेत्र में इतना विकास देखने को मिलता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी की वाक्य संरचना के निर्माण के लिये कारक व्यवस्था का उचित अभ्यास आवश्यक है। कारक व्यवस्था से तात्पर्य उस संरचना एवं पदों के प्रयोग की व्यवस्था से है जिसके द्वारा किसी वाक्य में विभिन्न संज्ञा एवं सर्वनाम पदों को क्रिया के साथ में वाक्य में व्यवस्थित किया जाता है।

मूलतः हिंदी में कारक 8 प्रकार के हैं। हिंदी की कारक व्यवस्था संस्कृत से ली गई है, इसमें अन्तर निम्न है-

हिन्दी	संस्कृत
• परसर्गों का प्रयोग	• विभक्तियों का प्रयोग
• लिंग वचन काल निरपेक्ष (सामान्यतः)	• लिंग वचन काल सापेक्ष

हिंदी के प्रमुख कारक

(क) **कर्ता**: जो वाक्य में क्रिया को करता है। (ने परसर्ग का प्रयोग)

'राम' ने रावण को मारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कर्म कारक :- जिसके प्रति कोई क्रिया की जाती है ('को' परसर्ग का प्रयोग)
- राम ने 'रावण को' मारा

(ग) करण कारक :- जिस के द्वारा कर्त्ता क्रिया को सम्पन्न करता है ('से, के द्वारा' परसर्ग)
- राम ने रावण को 'तीर से' मारा

(घ) संप्रदान ~~के लिये~~ कारक :- जिस वस्तु, विषय की पूर्ति या प्राप्ति हेतु क्रिया की जाती है ('के लिए' परसर्ग)
- राम ने रावण को 'सीता के लिये' मारा।

(ङ) अपादान कारक :- यदि कोई संज्ञा पद या सर्वनाम पद प्रारम्भ में क्रिया का आधार हो परन्तु बाद में क्रिया उससे अलग हो जाती है तो इसे अपादान कारक कहते हैं।
('से' अलग होने का भाव)
पेड़ से पत्ता गिरता है।

(च) संबंध कारक :- यह कारक क्रिया से कर्त्ता पदों के संबंधों को प्रदर्शित करता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- एकमात्र कारक जिसके परसर्ग लिंग, वचन सापेक्ष होते हैं (का, के, की परसर्ग)
- 'राम की पत्नी'

(ह) अधिकरण कारक :- वह पद जो क्रिया का भौगोलिक, कालिक, या मानसिक आधार होता है, संबंध कारक कहलाता है (में, पर परसर्ग)
- 'वह भूमि पर पड़ा है'
- 'सीता राम पर आश्रित है'

(ज) संबोधन कारक :- इस कारक पद का प्रयोग किसी को संबोधित या आह्वान करने के लिये किया जाता है। इसमें परसर्ग का प्रयोग पद से पहले किया जाता है। बहुवचन जहां के लिये अनुस्वार ~~कों~~ का प्रयोग भी नहीं होता है
है राम! तुम कहाँ जा रहे हो।

कारक संबंधी नियम

1) कारकों का क्रम :- संबोधन → कर्ता → अधिकरण → संबंध → अपादान → संप्रदान → करण → कर्म कारक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) केवल संबोधन ही ऐसा कारक है जहाँ परसर्ग कर्त्ता के पहले आता है।

3) सामान्यतः संबोधन कारक का प्रयोग हिंदी में कम किया जाता है।

इस प्रकार हिंदी की कारक व्यवस्था एक वैज्ञानिक व्यवस्था है जिसमें संस्कृत की विभि-विभक्तियों से सरलीकरण से परसर्गों का निर्माण हुआ है। किन्तु, सरलीकरण की परिणति तार्किकता एवं वैज्ञानिकता में हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, भावना, अनुभव आदि के नाम को 'संज्ञापद' कहा जाता है। वस्तुतः कोई भी शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने से पहले 'प्रातिपदिक' कहलाता है, परन्तु वाक्य में प्रयुक्त होने के उपरान्त इसे 'संज्ञापद' कहा जाता है। हिंदी में संज्ञा के तीन प्रकार होते हैं। अंग्रेजी में संज्ञा के 5 प्रकार हैं परन्तु वहाँ के 'समूह वाचक' एवं 'परिमाणवाचक संज्ञा' वर्ग को हिंदी की जातिवाचक संज्ञा में ही समाहित कर लिया जाता है।

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा :- इस संज्ञापद से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध होता है जैसे राम, श्याम, दिल्ली, जौप इत्यादि।

(ख) जातिवाचक संज्ञा :- जब कोई पद किसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तु, व्यक्ति को इंगित न कर उनके संपूर्ण वर्ग का बोध कराता है तो इसे जातिवाचक संज्ञा कहा जाता है जैसे लड़का, लड़की, शहर आदि। अंग्रेजी की ही तरह संज्ञाभेदों को इसी वर्ग में रखा जाता है -

समूहवाचक संज्ञा - सेना, लोग, कक्षा आदि।

परिमाणवाचक संज्ञा - पानी, दूध आदि

(ग) भाववाचक संज्ञा : जब कोई प्रतिपादित किसी भाव, भावना, अनुभव, अवस्था को व्यक्त करता है तो उसे भाववाचक संज्ञापद कहते हैं जैसे -

बुढ़ापा, बचपन, शांति, निर्वाण आदि।

इस प्रकार हिंदी की संज्ञा व्यवस्था का वर्गीकरण मूलतः तार्किक एवं वैज्ञानिक तरीके से हुआ है। कुछ अपवाद निम्न हैं

(क) जब कोई व्यक्ति का नाम अपने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुणों के कारण उन्हीं गुणों वाले व्यक्तियों के लिये संबोधन की तरह प्रयुक्त होने लग जाये तो इसे जातिवाचक संज्ञा की तरह प्रयोग करेंगे जैसे -

"वह आज का जयचंद है।"
"वह तो हिटलर है।"

उसी प्रकार यदि कोई जातिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति के लिये प्रयोग की जाये या रूढ़ हो जाये तो इसे व्यक्तिवाचक संज्ञा की श्रेणी में रखेंगे जैसे -

"नेताजी ने कहा था - तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

यहाँ नेताजी शब्द सुभाष चन्द्र बोस के लिये प्रयुक्त हुआ है अतः व्यक्तिवाचक संज्ञा का उदाहरण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी में वैज्ञानिक-लेखन में गुणाकर मुले का अवदान बताइए।

हिंदी में वैज्ञानिक-लेखन की सीमित परंपरा में गुणाकर मुले अपना सर्वोच्च स्थान रखते हैं। इन्हें भारत में हिन्दी का पहला वैज्ञानिक लेखक माना जाता है।

गौरतलब है कि मुले जी हिंदी-भाषी प्रदेशों से भी संबद्ध नहीं थे। ये महाराष्ट्र के निवासी थे। बहुभाषी, बहु-विषयों के ज्ञानी मुले जी ने अपनी प्रखर प्रतिभा, विवेक, परिश्रम के बल पर अनेक पुस्तकों की रचना हिंदी में की। साथ ही अंग्रेजी के अनेक पुस्तकों के अनुवाद भी मराठी में प्रस्तुत किये।

विज्ञान से लेकर गणित तक, अर्थशास्त्र, भाषा विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान सभी विषयों पर मुले जी का जबरदस्त अधिकार था। अपनी इस बहुमुखी प्रतिभा के दम पर ही इन्होंने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी के वैज्ञानिक लेखन में अप्रतिम योगदान दिया है।
इनकी प्रमुख पुस्तकें निम्न हैं-
(क) कैसी होगी 21वीं सदी :- इस पुस्तक में उन्होंने 21वीं शताब्दी में सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान के विकास के कारण विद्यमान जीवन का अत्यन्त सटीकता से वर्णन किया है।
(ख) आपेक्षिकता सिद्धान्त क्या है :- आइंस्टीन के आपेक्षिकता सिद्धान्त का सरल व सहज भाषा में प्रस्तुतिकरण
(ग) कंप्यूटर क्या है :- कंप्यूटर एवं इससे संबद्ध सामग्री का अत्यन्त रोचक भाषा में वर्णन किया है।
(घ) खगोल विज्ञान से संबंधित पुस्तकें 'नक्षत्र लोक' 'सौर मंडल' आदि
(ङ.) गणित से संबंधित पुस्तकें 'भास्कराचार्य', 'संसार के महान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गणितज्ञ'

(च) अन्य पुस्तकें -
- भारतीय अंक पहेलियों की कहानी
- संसार के महान वैज्ञानिक
- भारतीय विज्ञान की कहानी आदि।

इन सभी रचनाओं के बल पर ही मुलेजी ने न केवल हिन्दी गल्प लेखन की नींव रखी बल्कि अन्य वैज्ञानिक लेखकों के सामने एक उच्च उदाहरण भी पेश किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) देवनागरी लिपि की उन विशेषताओं पर प्रकाश डालिये, जिनके कारण यह एक वैज्ञानिक लिपि मानी जा सकती है। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि का विकास प्राचीन युग में ब्राह्मी लिपि से हुआ है। अपने मूल स्वरूप से ही यह लिपि वैज्ञानिकता को धारण करती रही है। लिपि की वैज्ञानिकता को सिद्ध करने वाली प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

(क) वर्णों के एक निश्चित तार्किक क्रम का होना :- देवनागरी लिपि में सर्वप्रथम स्वर (अ, आ, इ,) आते हैं उसके पश्चात व्यंजनों का प्रादुर्भाव होता है (क, ख, ग) जबकि अंग्रेजी में व्यंजनों के बीच में ही स्वर (A, E, I, O, U) आ जाने से तार्किक क्रम का अभाव है।

(ख) ध्वनि स्रोत के अनुरूप वर्ण क्रम :- लिपि में ध्वनि के स्रोत स्थल के अनुरूप ही वर्णों के वर्गों का निर्धारण किया गया है जैसे -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'क' वर्ग = तालु से उच्चारण
'च' वर्ग - ओष्ठ से उच्चारण
'ल' वर्ग - दन्त से उच्चारण
'ट' वर्ग - मूर्धन्य से उच्चारण

(ग) एक ही ध्वनि के लिये एक ही अक्षर का होना देवनागरी की विशेषता ऐसी है जो अंग्रेजी में नहीं है। 'ऊ' की ध्वनि के लिये अंग्रेजी में 'यू' भी है और '~~oo~~' डबल 'ओ' (oo) भी, जबकि देवनागरी में ऐसा नहीं है ऐसा ही उदाहरण 'इ' की ध्वनि में भी मिलता है

(घ) 'एक ही अक्षर एक ही ध्वनि को निरूपित करे' - यह विशेषता भी देवनागरी में है, अंग्रेजी में नहीं जैसे पुट (put) में 'यू' शब्द 'उ' की ध्वनि देता है परन्तु 'बट' (But) में 'यू' शब्द 'अ' की ध्वनि देता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) मात्रा व्यवस्था देवनागरी की एक अन्य वैज्ञानिक विशेषता है जिसके द्वारा 'स्थानलाघव' व 'प्रयत्नलाघव' का गुण प्रदर्शित होता है। अनेक अक्षरों को पूर्ण रूप में लिखने की ज़रूरत नहीं पड़ती जैसे - अमेरिका
अंग्रेजी में - 'AMERICA'

(च) शिरोरेखा की उपस्थिति देवनागरी में प्रत्येक शब्द को स्वतंत्र रूप प्रदान करती है एवं दो शब्दों के पारस्परिक मिश्रण को रोकती है उदा०
वह जा रहा है - शुद्ध रूप
वहजा र हाहै - अशुद्ध रूप

(छ) संयुक्त व्यंजनों (क्ष, त्र, ज्ञ) के कारण देवनागरी में दो शब्द न लिखकर एक ही अक्षर के द्वारा दो से तीन वर्णों की ध्वनि को समाहित कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिया जाता है जैसे-
क्ष- क् + ष

(ज) लगभग सभी ध्वनियों के वर्ण देवनागरी में उपलब्ध हैं।

(झ) अनुस्वार व्यवस्था के कारण भी देवनागरी में वर्णों के लिखने से बचा जाता है जो समय व स्थान की बचत करता है।

इन सभी विशेषताओं के कारण देवनागरी लिपि में वे सभी वैज्ञानिक पक्ष निहित हैं जो इसे एक आधुनिक एवं विकसित लिपि के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। कई गुणों में तो यह अंग्रेजी पर भी भारी पड़ती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के मानक स्वरूप के विकास में किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी व्याकरण लेखन का जो प्रारम्भ लल्लू जी लाल, केलॉग आदि फोर्ट विलियम के अध्यापकों ने शुरू किया उसे पूर्णता के स्तर पर किशोरीदास वाजपेयी ने पहुँचाया।

कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण (1918) के आने के पश्चात, व्याकरण का स्वरूप लगभग स्थिर हो गया था परन्तु आजादी के समय पर हिन्दी में समयानुरूप व्याकरण में भी कुछ परिवर्तनों का लाया जाना आवश्यक हो गया था।

इन समस्याओं के निराकरण के लिए 'नागरी प्रचारिणी सभा' की बैठक में राहुल सांकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि विद्वानों के आग्रह पर किशोरीदास

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वाजपेयी को कमान सौंपी गई। इनके लिए कुछ शर्तें रखी गयी।

(क) व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं का समावेश न किया जाये।

(ख) अन्य व्याकरणशास्त्री की प्रखर आलोचना न की जाये।

वाजपेयी जी ने लगभग 2 वर्षों के परिश्रम के उपरांत व्याकरण की रचना की जिसमें उन्होंने कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण की तीखी आलोचना भी की है। परन्तु दिलचस्प बात यह है कि अपनी पुस्तक के समर्पण में जिन व्यक्तियों का नाम है, उनमें कामताप्रसाद गुरु भी थे।

इस प्रकार वाजपेयी का योगदान निम्न स्तरों पर है।

(क) हिंदी व्याकरण का मानकीकरण किया।

(ख) व्याकरण को स्थिर रूप प्रदान कर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दिया।

(ग) पहले की के व्याकरण की त्रुटियों का भी निराकरण कर दिया।

इस प्रकार हिंदी व्याकरण रचना के चौथे चरण का प्रतिनिधित्व करने वाले वाजपेयी जी ने अपनी परिश्रम, प्रतिभा एवं ज्ञान के द्वारा हिंदी व्याकरण को मानक रूप प्रदान कर हिंदी के विकास में अमूल्य योगदान दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी की वचन-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी की वचन व्यवस्था संस्कृत की वचनव्यवस्था से विकसित हुई है।
संस्कृत के तीन वचनों (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) के बजाय हिंदी में केवल दो ही वचन शेष हैं एवं बहुवचन का लोप हो गया।

हिंदी की वचन परंपरा सामान्यतः तार्किक नियमों पर नहीं बल्कि लोक प्रयोगों से निर्मित हुई है।

विशेषताएँ

(क) पुल्लिंग एकवचन में 'आकारांत' ध्वनि बहुवचन में 'एकारांत' में परिवर्तित हो जाती है
लड़का → लड़के

(ख) शेष अंतिम ध्वनियों के बहुवचन का ज्ञान तो वाक्य प्रयोग के आधार पर ही होता है।
उसके पास कमल है →

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके पास अनेक कमल हैं।

(ग) स्त्रीलिंग में बहुवचन बनाना -

- इकारांत एकवचन से बहुवचन बनाने के लिये 'याँ' प्रत्यय जुड़ जाता है।
उदा० गति - गतियाँ, स

- 'ईकारांत' एकवचन से बहुवचन बनाने के लिये 'ई' का लोप हो जाता है एवं 'इयाँ' जुड़ जाता है। जैसे -

~~नदि~~ - नदी - नदियाँ
सदी - सदियाँ

- 'आकारांत' एकवचन में 'एँ' प्रत्यय जुड़ जाता है जैसे

महिला → महिलाएँ
अबला → अबलाएँ

- 'अकारांत' एकवचन में 'अ' का लोप हो जाता है एवं 'एँ' प्रत्यय जुड़ जाता है
जैसे - बहन - बहनें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अन्य विशेषताएँ

(क) कुछ शब्द केवल ~~एकवचन~~ बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं जैसे- आँसू, प्राण, ~~[illegible]~~ आदि।
- उसके प्राण उड़ गये

(ख) कुछ शब्द केवल एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं जैसे आग, भीड़ आदि

(ग) ब्रजी हिंदी में उत्तम पुरुष एकवचन में 'मैं' के बजाय 'हम' का प्रयोग किया जाता है।

(घ) आदरसूचक शब्दों में एकवचन में भी 'तुम' के बजाय 'आप' का प्रयोग किया जाता है जैसे
श्रीमान आप कहाँ जा रहे हैं?

(ङ) वर्ग, जन, लोग जुड़कर भी बहुवचन बनाये जाते हैं-
अधिकारी- अधिकारी वर्ग

इस प्रकार हिंदी की वचन व्यवस्था नोके- मिश्रित होते हुए भी अतार्किक नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नकेनवाद

'नकेनवाद' हिंदी साहित्य में कविता के क्षेत्र में पूर्वी भारत (बिहार) के क्षेत्र में पैदा हुआ एक आंदोलन है। वस्तुतः तीन कवियों - नरेश कुमार, केसरी कुमार एवं नलिन विलोचन शर्मा के नाम पर ही इस आंदोलन का नाम 'नकेनवाद' पड़ा।

इस आंदोलन के कवियों ने अज्ञेय के प्रयोगवाद को चुनौती देते हुए कहा कि वस्तुतः प्रयोगवादी कवि प्रयोगशील हैं क्योंकि उनका मूल उद्देश्य प्रयोग करना नहीं है। असली प्रयोगवादी तो वे हैं क्योंकि उनके अनुसार कविता का मूल उद्देश्य प्रयोग करना ही है। 1936-38 के दौर में ही उन्होंने कविता में विभिन्न प्रयोग कर कविता का मूल उद्देश्य प्रयोग करना बताया।

यौन-प्रसंगों की हलचल इनकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कविता में दिखलाई पड़ती है क्योंकि ये कविता में सिर्फ अवचेतन या अचेतन मन की ही प्रस्तुति करते हैं।

शब्दों के स्तर पर भी इन्होंने नये एवं नितान्त अप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जो पाठक को नितान्त अबोधनीय लगते हैं।

-1956 में इनका प्रमुख संकलन भी प्रकाशित हुआ 'नकेन के प्रपद्य'। इस धारा का हिंदी जगत में सम्माननीय स्थान नहीं है। 'अकविता' की 'निषेधता' के बीज इन कवियों की कविता में देखे जा सकते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) छायावाद के नए अलंकार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद खड़ी बोली के चरम विकास का काल है। चूंकि छायावादी कवि अनुभूति एवं भावनाओं को कविता का विषय बनाते हैं अतः सपाट कथनों से इनका कथ्य संप्रेषणीय नहीं हो पाता। कथ्य की विविधता, जटिलता एवं सूक्ष्मता को प्रेषित करने के लिये कुछ विशिष्ट युक्तियों का प्रयोग करना काम्य हो जाता है। अलंकारों के प्रयोग को लेकर पंत ने कहा भी है- "

"अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिये नहीं हैं वरन् वे भावाभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं।"

छायावाद में मुख्य तीन अलंकार हैं-

(क) मानवीकरण : यह अलंकार आचार्य कुन्तक के वक्रता सिद्धान्त में निहित 'उपचार वक्रता' से मिलता-जुलता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति से अपने संबंधों की सहजता को व्यक्त करने के लिये प्रकृति को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानव रूप में पेश किया है -

"मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुंदरी, परी सी
धीरे, धीरे धीरे।"

(ख) विशेषण - विपर्यय - तात्पर्य है कि किसी विशेष्य को अपने स्वाभाविक विशेषण के बजाय अन्य विशेषण से सुसज्जित करना जैसे - "बच्चे के तुतले मन से।"
"वेदना के छुरीले हाथों से"।

(ग) ध्वन्यार्थ व्यंजना - शब्दों की पुनरावृत्ति से ध्वनियों द्वारा भाषा में चमत्कार पैदा करने को 'ध्वन्यार्थ व्यंजना' कहते हैं -
'झर-झर-झर निर्झर गिरि सर से।'

अतः इन सभी उक्तियों से छायावादी कवि अपने कथ्य को संप्रेषणीय बनाने में सफल हुए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित रचना 'पल्लव' की भूमिका को हिन्दी साहित्य में वही स्थान प्राप्त है जो कि पश्चिम के प्रसिद्ध स्वच्छंदतावादी कवि विलियम वर्ड्सवर्थ की रचना 'लिरिकल बैलेड्स' की भूमिका को।

इस भूमिका में पंत ने हायावादी कविता की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया है। इसे हायावाद का घोषणापत्र भी कहा जा सकता है।

भूमिका में पंत ने निम्न तत्वों पर विचार किया है-

(क) कविता में 'कवि की अनुभूति' उसकी भावनाओं की अभिव्यक्ति को महत्व प्रदान किया।

(ख) ब्रज भाषा एवं खड़ी बोली के विवाद में खड़ी बोली को समर्थन

(ग) हिन्दी के विभिन्न शब्दरूपों, समास के रूपों, संधि की स्थिति आदि पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपना मत प्रकट किया।

(घ) अलंकारों को 'वाणी की सजावट' का उपकरण न मानकर 'भावाभिव्यक्ति का विशेष द्वार' बताया।

(ङ) कविता में व्यक्ति तत्व, सहज अनुभूतिशील भाषा, प्रकृति, कोमलता, चारुत्व, स्वातंत्र्य चेतना जैसे तत्वों को सर्वप्रथम पंत की इसी भूमिका में देखा जा सकता है।

इस प्रकार पंत ने एक ओर तो हावावाद का संपूर्ण दर्शन इस भूमिका में स्थापित किया तो दूसरी ओर, शुक्ल जी की आलोचना के जवाबी तर्क भी एक रूप में पहले से प्रस्तुत कर दिये।

आगामी कवियों की आलोचना पुस्तकों के लिये भी यह भूमिका कच्चा माल उपलब्ध कराती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) अज्ञेय की काव्यानुभूति का स्वरूप

अज्ञेय हिंदी साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं जिन्होंने हिंदी के दो प्रमुख आंदोलनों प्रयोगवाद (1942-51) एवं नई कविता (1952-60) की स्थापना में अपना प्रमुख योगदान दिया। अज्ञेय ने चार सप्तकों एवं अपनी कुछ कविताओं जैसे - 'असाध्य वीणा' के माध्यम से अनुभूति का स्वरूप स्पष्ट किया है।

(क) अज्ञेय गैर-रोमांटिक भावबोध के कवि हैं। वे कहते हैं कि 'भावनाएँ नहीं हैं सोता' बल्कि 'भावनाएँ खाद हैं केवल'।

(ख) अज्ञेय के व्यक्तित्व पर इलियट का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। चाहे निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त हो या वस्तुनिष्ठ समीकरण या परंपरा सिद्धान्त अज्ञेय ने अपनी रचनाओं ('शेखर : एक जीवनी' आदि) में इन्हें स्थापित करने का प्रयास किया है।

(ग) अज्ञेय का बौद्धिक प्रेम दृष्टिकोण प्रेम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को और रोमानी दृष्टिकोण से देखता है-

"फूलों से प्यार करो
पर झरे तो झर जाने दो"

(घ) व्यक्तिगत स्वतंत्रता का स्वर इनकी कविताओं ('नदी के द्वीप'), में प्रबल हुआ है। वे समाज 'से' नहीं, समाज 'के' स्वतंत्रता चाहते हैं- "हम नदी के द्वीप हैं ×××
हम बहते नहीं हैं ×××
क्योंकि बहना रेत होना है।"

(ङ) अज्ञेय 'युग' को महत्व न देकर क्षण को महत्व देते हैं-

"और सब समय पराया है
बस उतना ही क्षण अपना
तुम्हारी पलकों का कँपना।"

(च) अज्ञेय भाषा व शिल्प को भी अत्यन्त महत्व देते हैं। वे इसे 'जानने की वस्तु' मानते हैं।

इसप्रकार नई कविता, प्रयोगवाद जैसे आंदोलनों में अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषवाद से प्रभावित अज्ञेय ने 'व्यक्तिवादी आधुनिकतावाद' की धारा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला 'ओज' के कवि हैं। अपने महाप्राण व्यक्तित्व के बल पर ही वस्तुतः छायावादी कवि होने पर भी कई स्थानों पर वे अपने व्यक्तित्व का अतिक्रमण कर जाते हैं। 'तुलसीदास' नामक रचना में वे अपने प्रिय कवि तुलसीदास के जीवन वृतान्त के साथ-साथ अपनी दुर्दम्य जिजीविषा का भी निदर्शन कराते हैं।

कविता की शुरुआती पंक्तियाँ निराशावाद से भरी प्रतीत होती हैं -

"उर के आसन पर शिरस्त्राण
राज करते हैं मुसलमान"

इसके बाद तुलसीदास की दुर्दशा, उनकी पत्नी द्वारा उनका त्याग कर देना आदि से ऐसा प्रतीत होता है कि निराला ने निराशा के भावयुक्त कविता लिखी है।

परन्तु कविता के दूसरे खण्ड में तुलसीदास ने को प्रकृति के माध्यम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से प्रेरणा प्राप्त होना और तीसरे खण्ड में पत्नी की कटु बातों से उनके चक्षुओं का खुलना निराला की जिजीविषा को प्रदर्शित करता है।

कविता के माध्यम से निराला ने व्यक्ति को अपने आंतरिक शक्तियों पर भरोसा कर कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी पीछे न हटने का संदेश दिया है। 'राम की शक्ति पूजा' की मूल संवेदना 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' की पूर्व पीठिका निराला की इस कविता में भी दिखाई पड़ती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या छायावाद तद्युगीन राष्ट्रीय चेतना से पलायन का काव्य है? सप्रमाण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद के संबंध में एक आक्षेप हमेशा लगता है कि यह तद्युगीन राष्ट्रीय चेतना से पलायन का काव्य है। आलोचकों के अनुसार एक तो छायावाद ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के अति महत्वपूर्ण चरण में रहते हुए भी इसका वर्णन के बराबर किया है, दूसरा प्रसाद एवं महादेवी की कुछ कविताएँ पलायन की मानसिकता से प्रभावित दिखती हैं जैसे

"मैं नीर भरी दुख की बदली" (महादेवी)

"ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे"
(प्रसाद)

सरसरी निगाह से देखने पर यह आक्षेप उचित प्रतीत होता है परन्तु नामवर सिंह ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'छायावाद' में सुचिंतित तर्कों से यह सिद्ध किया है कि छायावादी काव्य राष्ट्रीय संग्राम के प्रसंगों का 'रोजनामचा' नहीं लिखता। इसके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मूल्य छायावाद काव्य में गहरे स्तर पर विद्यमान हैं। यह घटना वर्णन न कर चिंतन के स्तर पर अत्यन्त सक्रिय रहा है।

पहला तर्क 'जागरण' शब्द के बारंबार प्रयोग को लेकर है। छायावादी कवियों में सभी ने इस शब्द का प्रयोग सोये हुए भारतीय जनमानस को जागृति लाकर उसे देश की स्वतंत्रता के पक्ष में सक्रिय बनाने हेतु किया है। उदा०

"बिती विभावरी जाग री" (प्रसाद)
"जाग तुझको दूर जाना" (महादेवी)
"जागो फिर एक बार" (निराला)

दूसरे स्तर पर छायावादी कवियों ने भारतीय संस्कृति की प्रशंसा कर भारतीयों में स्वाधीनता एवं आत्मसम्मान की भावना जगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है -
"पश्चिम की उक्ति नहीं, गीता है गीता है" (निराला)

कुछ स्थानों पर तो ऐसा लगता है मानो छायावादी कवि पूर्णतः ओज एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जोश के साथ आह्वान कर रहे हों कि सम्पूर्ण जनमानस भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई हेतु जागृत होकर अपना योगदान दे'

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती"
(प्रसाद)

छायावादी काव्य न केवल संग्राम के लिये निष्क्रिय तस्वीर पेश करता है बल्कि परतंत्रता के कारणों की उचित समीक्षा कर (अन्याय जिधर है उधर शक्ति) देश के नेतृत्व को उचित सलाह व सक्रिय मार्ग दर्शन भी पेश करता है। 'राम की शक्तिपूजा' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है:-

"अराधन का दृढ़ अराधन से दो उत्तर
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर"

छायावाद की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के चेतना एक अन्य स्तर पर दृष्टिगोचर है। जिस प्रकार महात्मा गांधी केवल भारत-मुक्ति की बात

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं करते थे बल्कि संपूर्ण मानव की मुक्ति एवं कल्याण की बात करते थे। उसी प्रकार का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित विचार छायावादी कवि 'प्रसाद' की प्रसिद्ध रचना 'कामायनी' में देखने को मिलता है -

"औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ"

इस प्रकार यह आक्षेप पूर्णतः गलत है कि छायावादी काव्य पलायन का काव्य है। कविताओं को चुन-चुनकर ऐसे आरोप लगाना सरल है, परन्तु रचनाओं के सूक्ष्म अवलोकन करने पर राष्ट्रीयता चेतना संपूर्ण छायावाद की प्रमुख विशेषता के रूप में नजर आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी यात्रा-साहित्य के विकास में राहुल-सांकृत्यायन के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य के यात्रा - साहित्य में राहुल सांकृत्यायन एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। एक घुमक्कड़ जीवन व्यतीत हुए राहुल जी ने अनेक देशों एवं लगभग संपूर्ण भारत की यात्रा की। उनकी यायावरी के प्रति लगाव का अंदाजा उनकी पुस्तक में निहित एक शेर के माध्यम से लगाया जा सकता है -

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ
जिंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ"

राहुल जी के यात्रा संग्रहों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम वे संग्रह जहाँ वे भारत के बाहर की यात्रा करते हैं। इन यात्रा संग्रहों में प्रमुख हैं - 'तिब्बत में सवा वर्ष' - इस संग्रह में राहुल जी ने तिब्बत के सौन्दर्य एवं बौद्ध धर्म से जुड़ी अनेक रोचक वृतान्त लिखे हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा 'मेरी यूरोप यात्रा' नामक संग्रह में इन्होंने ई 1935 के समय में विभिन्न यूरोपीय देशों की यात्रा करते हुए वहाँ की संस्कृति, वेश-भूषा, खान-पान, संगीत, नृत्यों आदि का रोचक एवं जीवंत भाषा में वर्णन प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार 'गंगा से वोल्गा', 'ज्ञान के उद्यान में' जैसे संग्रहों में इन्होंने रूस समेत यूरोपीय यात्रा के साथ वहाँ के खान-विज्ञान को भी प्रशंसनीय निगाह से देखा है।

दूसरे स्तर पर इन्होंने सम्पूर्ण भारतवर्ष की भी यात्रा की थी। लगभग संपूर्ण जीवन एक घुमक्कड़ एवं यायावर के रूप में गुजारकर राहुल ने घाट-घाट का पानी पिया। उनका 'अथाह घुमक्कड़ जिज्ञासा' इसी प्रकार का संग्रह है। इसके अलावा 'मेरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'लद्दाख यात्रा' में भी राहुल ने तिब्बत के साथ-साथ भारतीय भूमि पर भी बौद्ध धर्म के प्रमुख पक्षों का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है।

छायावादोत्तर युग में 'राहुल यात्रावली', 'मेरी यात्रा के पन्ने' आदि प्रमुख कृतियाँ हैं।

इस प्रकार हिन्दी यात्रा-साहित्य में राहुल का योगदान अविस्मरणीय है। भाषा की दृष्टि से भी ये वृत्तान्त अत्यन्त रोचक बन पड़े हैं, जो राहुल को इस धारा में सर्वोच्च स्थान दिलाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की प्रगतिवादी काव्यधारा का शुभारंभ 1936 में हुआ। यह धारा मार्क्सवादी सिद्धान्तों पर आधारित काव्यधारा है। इसी प्रकार प्रयोगवाद प्रगतिवाद के बाद शुरू हुआ काव्यांदोलन है (1943-51) जिसमें विभिन्न कवियों द्वारा अपने स्तर पर सत्य की खोज का प्रयत्न किया गया।

प्रमुख अंतर

	प्रगतिवाद	प्रयोगवाद
विचारधारा	मूलतः मार्क्सवाद में विश्वास ↓ "लाल रूस की लड़नेवाली मजदूर सेना आम, उनका उनके स्त्री-पुरुषों को मेरा लाल सलाम" (मुक्तिबोध)	- किसी भी विचारधारा के सत्य को अंतिम मानने को तैयार नहीं बल्कि अपने स्तर पर सत्य की खोज करना चाहते हैं। "बिना सीढ़ी के बढ़ेंगे तीर के जैसे बढ़ेंगे इसलिए इन सीढ़ियों के टूटने का दुःख टूटने का सुख" भवानीप्रसाद मिश्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

② व्यक्ति या समाज को महत्व :- जहाँ प्रगतिवादी धारा 'समाज' को रचना का केन्द्र बिन्दू मानती है वहीं प्रयोगवाद व्यक्ति को समाज 'में' स्वतंत्रता प्रदान करना चाहता है। "हम नदी के द्वीप हैं
हम बहते नहीं हैं" अज्ञेय

③ युग को महत्व या क्षण को :- जहाँ प्रगतिवाद युगीन बोध को महत्व देकर उसे बदल डालना चाहता है, वहीं प्रयोगवाद क्षणात्मक अनुभूति को महत्व प्रदान करता है।

तू है मरण, तू है ~~सर्व~~ सन्त - तू है व्यर्थ (मुक्तिबोध)
तेरा ध्वंस केवल तेरा एक अर्थ

"और सब समय पराया है। केवल उतना ही
क्षण अपना। तुम्हारी पलकों का कंपना" (अज्ञेय)

④ जहाँ प्रगतिवाद अपनी कविता के केन्द्र में मजदूर या किसानों एवं ग्रामीण जीवन को रखता है वहीं प्रयोगवाद में शहरी जीवन प्रमुखता रखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) जहाँ प्रगतिवादी कविता का प्रमुख लक्ष्य समाज में तनाव उत्पन्न कर क्रान्ति के माध्यम से परिवर्तन करना है वहीं प्रयोगवादी कविता का उद्देश्य बस 'अधिक से अधिक लोगों को संस्कारित करना है।'

(6) प्रगतिवादी प्रेम को सहजता से जीवन का अंग मानते हैं वहीं प्रयोगवादी प्रेम प्रेम को गैर-रोमांटिक दृष्टिकोण से देखते हैं।
"मिलकर वे दोनों प्राणी, दे रहे खेत में पानी"
(प्रगतिवाद)
फूलों से प्यार करो, पर झरे तो झर जाने दो
(प्रयोगवाद)

(7) प्रगतिवादी शिल्प को गौण मानते हैं। उनकी कविता में 'वस्तु' का महत्व है रूप का नहीं
(चन्दू है सविता है, पोस्टर ही कविता है)
जबकि प्रयोगवादी कवि नये शिल्प, नये उपमानों प्रतीकों को ही कविता की महत्ता का निर्णायक बिंदु मानते हैं।

इस प्रकार प्रयोगवाद प्रगतिवाद का अगला स्तर है अनेक प्रगतिवादी कवि जैसे मुक्तिबोध, रामविलासशर्मा आदि प्रयोगवाद में भी शामिल है

Copyright – Drishti The Vision Foundation